जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

“ किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ”

–सफ़दर हाश्मी

हेलन केलर ने बीमारी से बचपन में ही अपनी आंखों की रोशनी और सुनने की क्षमता खो दी थी। अपनी शिक्षिका ऍन सुलीवन के अथक प्रयासों द्वारा उन्होंने पढ़ना-लिखना और बोलना सीखा। बाद में वो विश्वविख्यात हुईं। हेलन केलर की आत्मकथा हर मनुष्य के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है। इस विलक्षण महिला और उसकी अद्वितीय टीचर को लोग सदा-सदा के लिए याद रखेंगे। उनके जीवन की इस कहानी में हरेक इंसान के लिए एक सबक है - अगर मनुष्य चाहे तो बड़ी-से-बड़ी बाधा पर भी विजय प्राप्त कर सकता है। यह कॉमिक पुस्तिका बच्चों और बड़ों सभी को पंसद आएगी।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्यः 12 रुपए   B - 70   Price 12 Rupees

हेलन केलर

की आत्मकथा

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

हेलन केलर की आत्मकथा

अनुवादः अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

चित्रः साभार अकैडमिक इंडस्ट्रीज़
ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्षः 2004, 2006

मूल्यः 12 रुपए

Published by Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

हेलन केलर की आत्मकथा

यह एक अंधी और बहरी लड़की की सच्ची कहानी है।
उसने बड़े संघर्ष के बाद बोलना सीखा।
बाद में वो सारी दुनिया में बहुत प्रसिद्ध हुई।
परंतु शुरू के साल उसे बहुत कठिनाईयों में बिताने पड़े।
उसने अपने चारों ओर छाई चुप्पी और अंधेरे को बहुत संघर्ष के बाद तोड़ा।

मेरा जन्म 1880 में उत्तरी ऐलाबामा (अमरीका) के एक छोटे से शहर में हुआ।

परिवार की पहली संतान होने के नाते लोगों ने मेरी खूब खातिरदारी करी।
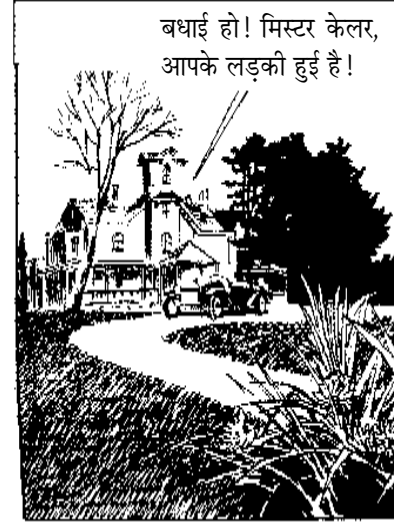
जब मैं छह महीने की थी तब...

मैंने और भी बहुत से शब्द सीखे...

जब मैं एक साल की थी तब मैंने चलना शुरू कर दिया।

उस गर्मी और पतझड़ के मौसम में मैं काफी खुश थी।

फिर फरवरी में एक भयंकर बीमारी ने मुझे आ दबोचा।

अभी इस बात का किसी को पता नहीं था कि मैं अब से देख और सुन नहीं सकूंगी।

परंतु वो बीमारी मुझे अंधेरे और सन्नाटे में छोड़ गई।

अगले कुछ महीनों तक मैं अपनी मां के बहुत करीब रही।

मैंने उनके चलने की आवाज़ को पहचानने लगी।

मैं अपने हाथों से हर चीज़ को छूती।

मैंने कई काम करना सीखे। मैं अपने कपड़ों को तह करके रख सकती थी...

फिर मैं संकेतों द्वारा बातचीत करने लगी। ''न'' के लिए मैं अपना सिर बाएं-दाएं हिलाती। ''हां'' के लिए मैं अपना सिर ऊपर-नीचे हिलाती।

''खींचने'' का मतलब होता मेरे साथ चलो।

''धक्का'' देने का मतलब होता जाओ।

मैंने कुछ अन्य संकेत भी सीखे...

मैं बहुत सी बातें समझती थी। मैं अपनी मां के कपड़ों को छूकर समझ जाती थी कि वो कब बाहर जाएंगी।

मैंने देखा कि बाकी लोग संकेतों से नहीं बोलते थे। वो अपने मुंह से बोलते थे। मैंने उनके होठों को छूकर देखा...

मैंने भी अपने होंठों को चलाया और अपने हाथों को ज़ोरों से हिलाया - परंतु उसका कोई नतीज़ा नहीं निकला।

गुस्से में आकर मैं चीखने-चिल्लाने लगी और हाथ-पैर पटकने लगी। अंत में मैं थक कर पस्त हो गई।

जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई मेरा गुस्सा भी बढ़ता ही गया।

ऐसा नहीं कि मैं हर समय गुस्से में ही रहती थी। मैं रसोई में जाकर खाना पकाने वाली औरत की खूब मदद करती थी।

उसकी बेटी मार्था मेरी दोस्त थी। वो मेरे संकेतों को समझती थी।

हम दोनों बहुत शैतानी करते थे। एक बार हम पूरा केक बाहर ले गए...

बाद में...

एक बार हम दोनों कागज़ को काटकर उनकी गुड़िए बना रहे थे...

मां ने ठीक समय पर आकर मेरे घुंघराले बालों को बचा लिया।

जब मेरी बहन माइल्डरिड का जन्म हुआ तब मैं अपनी मां की अकेली चहेती नहीं रह गई। इससे मैं बहुत दुखी हुई!

एक दिन मैंने माइल्डरिड को अपनी गुड़िया के पालने में पाया।

मैंने उसे फेंका, पर मां ने आकर उसे बचा लिया।

इस बीच मेरा तेज़ गुस्सा ज़ारी रहा...

मेरा गुस्सा अब काफी देर तक रहता था।

फिर मैं रोती और अपने हाथों को मां के गले में डाल देती।

इस बीच मैंने चाबी को उपयोग करना सीख लिया।

एक दिन मैंने मां को कोठरी में बंद कर दिया।

कृपा करके मुझे बाहर निकालो!

ठक... ठक...

उस समय आसपास और कोई नहीं था। मां तीन घंटे बाद ही बाहर निकलीं।

फिर हम ट्रेन से बाल्टीमोर गए...

... जहां डॉ. क्रिसहोल्म ने मेरी जांच की।

उसके बाद हम वाशिंगटन गए।

पर जब हमने डाक्टर बेल से बात की...

फिर हम घर वापिस आए। कुछ हफ्तों के बाद...

जिस दिन मेरी टीचर मुझसे मिलने आयीं वो मेरे पूरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन था। उनके आने का घर में इतना कोहराम मचा कि मुझे लगा कि अब कुछ महत्वपूर्ण होने वाला है।

मैं बाहर बैठकर उनके आने का इंतज़ार करती रही...

मुझे अपनी ओर आते पदचापों की आवाज़ सुनाई दी। मुझे लगा कि मेरी मां आ रही हैं! इसलिए मैंने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

किसी ने मेरे हाथ को थाम लिया...

मुझे मेरी टीचर ने अपने गले से लगा लिया।
वो मुझे दुनिया की बहुत सी चीज़ों के बारे में सिखाने के लिए आयीं थीं।

अगली सुबह मेरी टीचर मुझे अपने कमरे में ले गयीं...

उन्होंने मुझे एक नई गुड़िया दी।

मैंने उसके साथ कुछ समय तक खेला।

फिर उन्होंने डौल यानी ''गुड़िया'' के अक्षरों को मेरी हथेली पर लिखा।
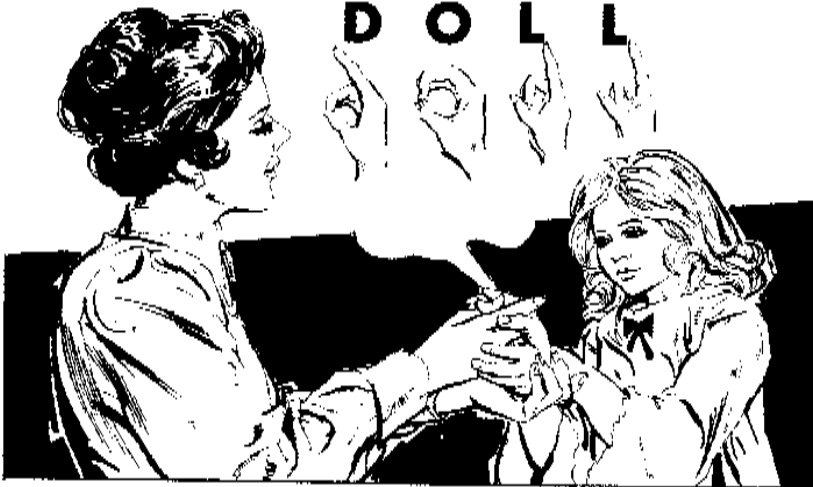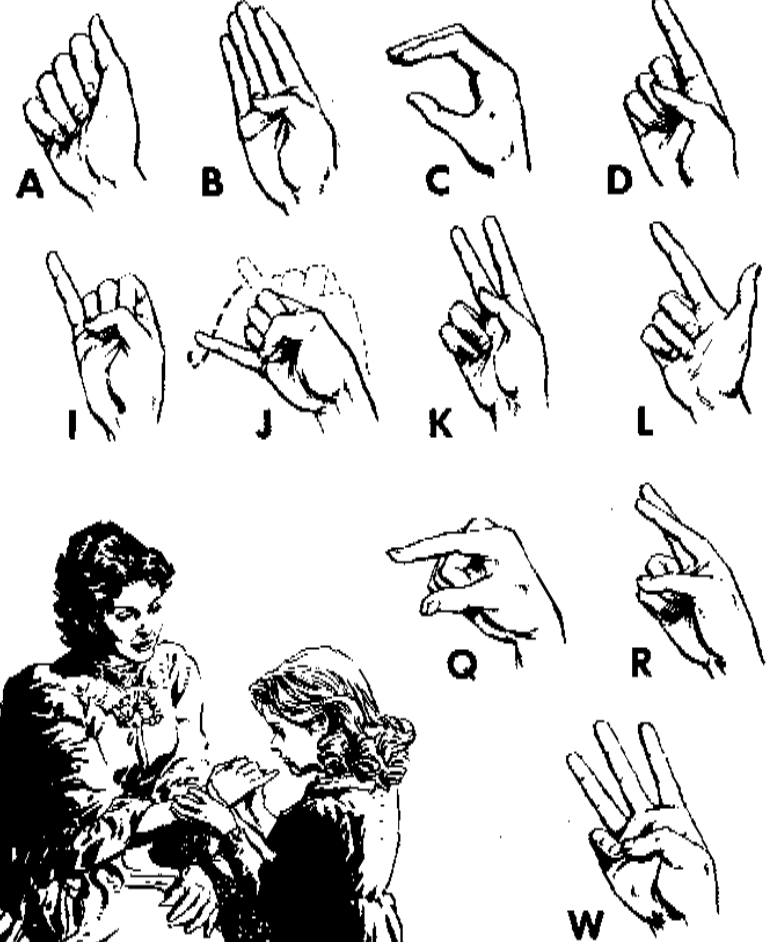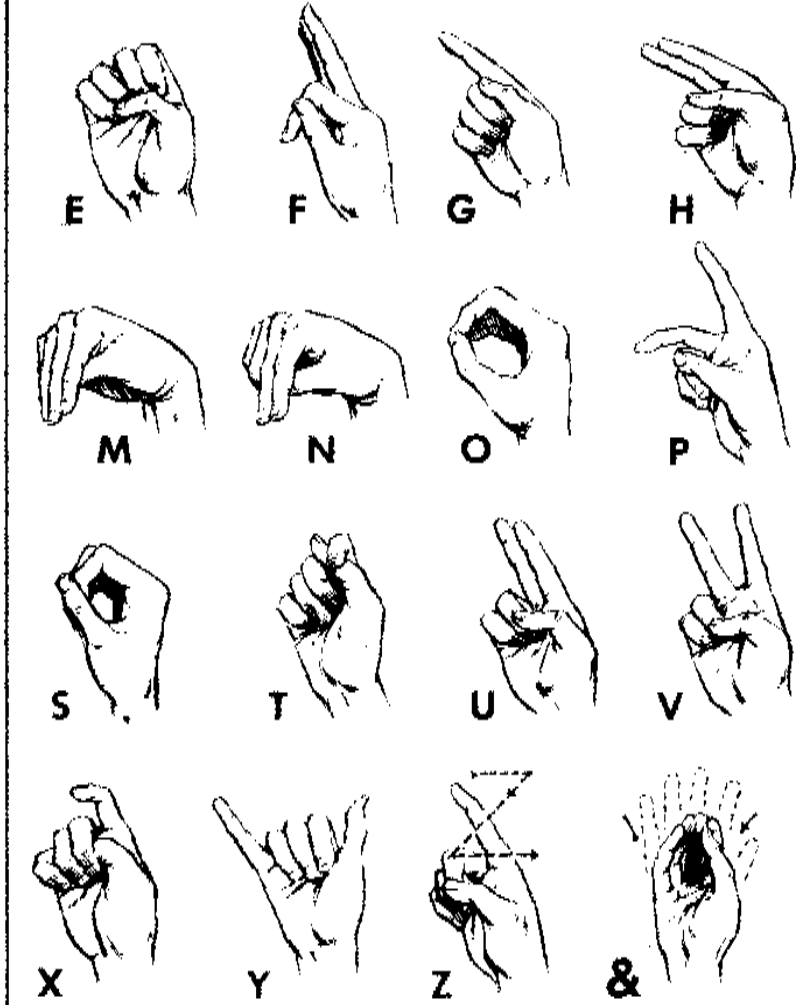
जो भी मेरी टीचर करतीं, मैं भी वही करती।

अंत में मैं उन्हें आसानी से करने लगी।

मैं दौड़ती हुई नीचे गई और वहां जाकर मैंने अपनी मां को ''गुड़िया'' शब्द लिख कर दिखाया।

इस प्रकार मेरी शिक्षा की शुरुआत हुई। उसके कारण ही मैं सन्नाटे और अंधेरे को तोड़ पाई।

भाग 2 — लेखिका ऍन सुलीवन

पाठकों के लिए: अभी तक आप हेलन केलर की आत्मकथा पढ़ रहे थे। हेलन ने किस प्रकार पढ़ना सीखा उस तरीके के बारे में हेलन केलर की टीचर ऍन सुलीवन ने खुद लिखा है।

केलर परिवार में आने के कुछ देर बाद, नाश्ते के समय...
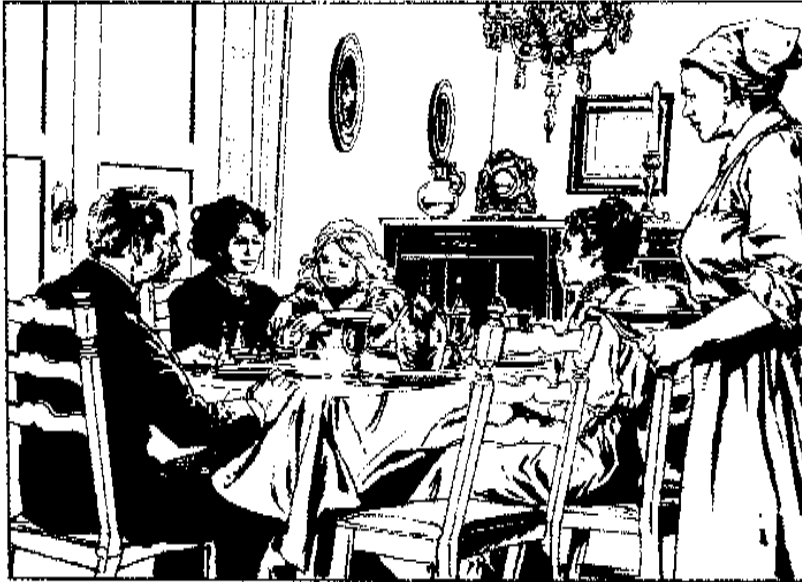
हेलन को जो कुछ भी चाहिए होता था वो उसे मुझसे छीनती थी। परंतु मैं उसे कभी भी अपनी प्लेट में हाथ डालने नहीं देती थी।

मुझे उससे लड़ना पड़ता था।

हेलन के माता-पिता के जाने के बाद मैंने कमरा बंद करा।

मैं दुबारा खाने को बैठी।

हेलन ज़मीन पर लेटकर रोने-चीखने लगी।

ऐसा कोई आधे घंटे तक चलता रहा, फिर...

हेलन ने मुझे नोंचना शुरू किया, और...

उसके नोंचने के बाद, हर बार मैंने उसे चांटा मारा।

अंत में वो खुद अपने हाथों से खाना खाने के लिए बैठी।

फिर मैंने उसे खाने के लिए एक चम्मच दिया परंतु उसने उसे फर्श पर फेंक दिया।

फिर मैंने उसे ज़बरदस्ती चम्मच से खाने के लिए मज़बूर किया।

कुछ समय बाद उसने बड़ी शांति से अपना नाश्ता खत्म किया।

हम दोनों बहुत बार लड़े। उसके बालों को कंघी करते समय...

उसके हाथ धोने को लेकर...

इसके लिए सबसे अच्छा यह होगा कि हेलन को कुछ हफ्तों के लिए परिवार से अलग रखा जाए।

मैं मिस्टर केलर से बात करके आपको इसके बारे में बताऊंगी।

बाद में...

हम आपसे सहमत हैं। अच्छा होगा कि आप कुछ दिनों के लिए हेलन को लेकर कहीं चली जाएं। थोड़ी दूर पर हमारा एक छोटा सा और घर है। वो आपके लिए बिल्कुल ठीक होगा।

बहुत अच्छा! आप रोज़ वहां आकर हेलन को देख सकते हैं। परंतु हेलन को इसका बिल्कुल भी पता नहीं चलना चाहिए।

फिर मैं और हेलन दोनों उस छोटे घर में रहने चले गए।

उस रात हम दोनों में ज़ोरदार लड़ाई हुई। हेलन को सुलाने में मुझे दो घंटे का समय लगा।

परंतु दो हफ्तों के बीतने के बाद...

हेलन को तुरंत कमरे में कोई नई चीज़ महसूस हुई। उसने उसे खोजा ...

वो यह सब क्या कर रही है?

वो कुत्ते को ''गुड़िया'' शब्द लिखना सिखा रही है।

कुछ दिनों के बाद मैं और हेलन वापिस उसके माता-पिता के साथ रहने आ गए।

मुझे लगता है कि मैंने हेलन की शिक्षा की अच्छी शुरुआत की है। आप मुझसे वादा करें कि अगर मैं उसे सज़ा भी दूं तो भी आप बीच में नहीं बोलेंगे।

हम वादा करते हैं। हम उसकी प्रगति से बहुत खुश हैं।

और इस प्रकार मैंने हेलन की पढ़ाई ज़ारी रखी। एक महीने के अंदर ही हेलन ने बुनाई और इक्कीस शब्द सीख लिए।

भाग 3 — हेलन केलन द्वारा लिखित

पाठकों से:
यहां हम हेलन केलर द्वारा लिखी अपनी आत्मकथा पर वापिस लौटते हैं।

मैं अब बहुत से शब्द सीख गई थी। फिर भी मैं अक्सर ''लोटा'' और ''पानी'' जैसे शब्दों के बीच में उलझ जाती थी।

अब तक मिस सुलीवन ने जो शब्द मुझे सिखाए थे वो मेरे लिए महज़ एक खेल थे। मुझे यह नहीं पता था कि शब्द किसी वस्तु या चीज़ का नाम होता है, और उसका कुछ मतलब भी होता है।

एक दिन उन दोनों शब्दों को लेकर हमारी लड़ाई हुई।

मिस सुलीवन ने विषय को बदलने के लिए मुझे मेरी नई गुड़िया दी।

कुछ देर उन्होंने मुझे खेलने दिया।
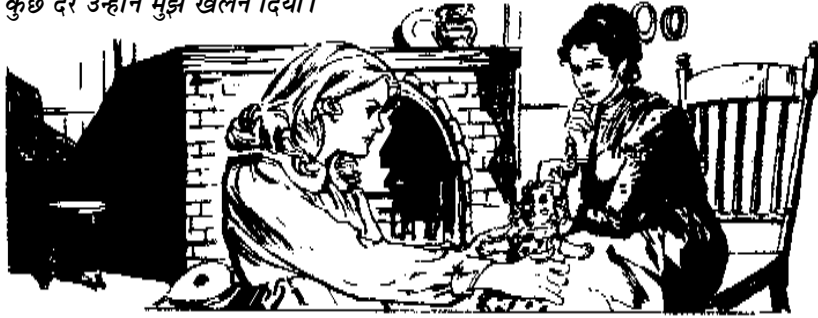
फिर उन्होंने दुबारा उन दोनों शब्दों के बीच का अंतर मुझे बताने की कोशिश की।

इस पर मुझे बहुत ज़बरदस्त गुस्सा आया।

मैंने गुड़िया को उठाया, और...

बड़ी शांति से उन्होंने उसके सब टुकड़ों को बटोरा।

फिर उन्होंने मुझे हैट पहनाई। इससे मुझे पता चल गया कि अब हम बाहर घूमने जाएंगे।

हम लोग बाहर पगडंडी से होते हुए कुंए के पास गए।

उन्होंने नल के नीचे मेरे हाथ को रखा।

और ''पानी'' शब्द के अक्षरों को मेरी हथेली पर लिखा, इससे...

.... अचानक पानी क्या होता है यह मुझे समझ में आ गया।

मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे किसी चमकदार रोशनी के दर्शन हुए हों।

अंत में मैं भाषा के रहस्य को समझने में सफल हुई!
हर चीज़ का एक नाम होता है!

मैं अपने आसपास की हरेक चीज़ का नाम जानना चाहती थी।

घर वापिस आकर मुझे उस गुड़िया की याद आई जिसे मैंने तोड़ा था।

मैंने उसके टुकड़ों को आपस में जोड़ने की कोशिश की।

जीवन में पहली बार मुझे अपनी गलती पर दुख हुआ।

परंतु मैं नए शब्द सीखने की खुशी में जल्द ही अपने दुख को भूल गई।

हेलन ने आज तीस नए शब्द सीखें हैं और वो उन सभी का मतलब भी जानती है।

उस रात जब मैं सोने गई तो मुझे वो दिन अपने जीवन का सबसे सुखद दिन महसूस हुआ।

उन गर्मियों में मैंने अपने आसपास की हरेक चीज़ को छूकर देखा और उसका नाम जाना। मिस सुलीवन ने मुझे प्रकृति की सुंदरता के बारे में भी सिखाया।

मैंने हर चीज़ खोजी और छानबीन की...

एक गर्मी वाले दिन मैं पेड़ पर चढ़ी।

वहां की ठंडक मुझे बड़ी अच्छी लगी।

मिस सुलीवन ने मुझसे वहां बैठने को कहा और फिर वो खाना लेने चली गयीं।

उनके जाने के बाद तूफान आया और बहुत तेज़ हवा चलने लगी।

पेड़ ज़ोर-ज़ोर से हिलने लगा।

मुझे बड़ा डर लगा।

मिस सुलीवन को वापिस आते देख मुझे कुछ तसल्ली हुई!

मैंने सीखा था कि प्रकृति हमेशा शांत नहीं रहती है।

शिक्षा के अगले चरण में मुझे पढ़ना सीखना था। मेरी टीचर ने मुझे उभरे अक्षरों वाले कार्ड दिए।

मैंने अक्षरों को अपनी उंगली से छूकर पढ़ा।

मुझे पता चला कि हरेक शब्द का कुछ मतलब होता है।

मैंने खेल खेले...

... चीज़ों और शब्दों दोनों से।

जल्द ही...

.... मैं उभरे अक्षरों वाली किताबें पढ़ने लगी।

फिर मैंने नेत्रहीनों के लिखाई वाले बोर्ड पर लिखना सीखा।

मिस सुलीवन ने मुझे शब्दों को चौकोर बनाकर लिखना सिखाया।

जब मैंने अपना पहला वाक्य लिखा...

मिस सुलीवन, आपने तो हेलन के साथ कमाल ही कर दिया!

धन्यवाद मिसेस केलर, पर यह कमाल तो हेलन ने खुद किया है!

मिस सुलीवन ने मिट्टी के नक्शे बनाए और मैंने उनसे भूगोल सीखा...

.... मैंने मिट्टी के बांध और तालाब बनाए!

मिस सुलीवन ने मुझे कई बातें समझायीं।

मैंने पौधों के जीवन के बारे में सीखा...
....और जानवरों के जीवन के बारे में भी...
....और मिस सुलीवन ने मुझे बीते हुए इतिहास के बारे में भी बताया।
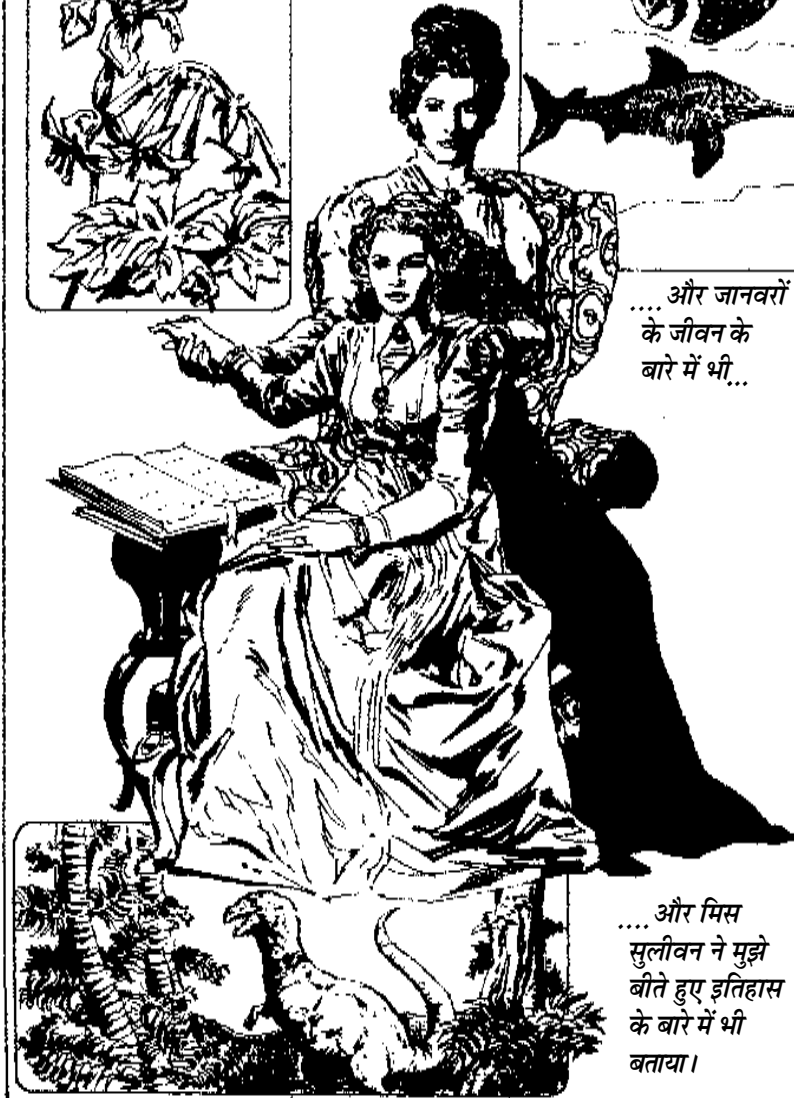
मैंने प्लेथम रॉक एवं अन्य स्थानों की यात्रा करके इतिहास सीखा...
....मैं बंकर हिल भी गई।

बस एक विषय से मुझे नफरत थी - अंकगणित से।

अंकगणित देखते ही मैं बाहर खेलने के लिए भाग जाती थी!

केप कॉड की सैर से मुझे समुद्र का ज्ञान हुआ।

मैंने पूछा, ''इसके पानी में नमक किसने मिलाया है?''

न्यू इंग्लैंड की सैर के दौरान मैं स्नो और कड़क ठंड का अनुभव कर पायी...

.... वहां बर्फ-गाड़ी पर फिसलने में मुझे बहुत मज़ा आया।

मैं अब हर समय कुछ बोलना चाहती थी। अपने मुंह से मैं कुछ आवाज़ें भी निकाल सकती थी.....

मुझे बिल्ली की आवाज़ अच्छी लगती थी...

जब कोई पियानो बजाता तो मुझे पियानो पर हाथ रखना अच्छा लगता...

मैं गाने वाले के गले को छूकर देखती।

अब मैंने बोलना सीखने के लिए अपना मन पक्का कर लिया था।

एक दिन मिस सुलीवन, होरेस मॉन स्कूल की मिस फुलर से मिलने गयीं।

उसके बाद मिस फुलर ने मुझे सिखाना शुरू किया।

मैंने उनके होठों और जीभ के चलने की नकल उतारी।

एक घंटे में मैंने छह अक्षरों की ध्वनियां सीखीं।

अपना पहला वाक्य बोलते समय मुझे कितने गर्व का अहसास हुआ!

मेरी कही बात को समझना आसान न था। मुझे मिस सुलीवन के साथ बहुत अभ्यास करना पड़ा...

.... हफ्तों और महीनों तक कोशिश करनी पड़ी...

.... और तभी मैं बोलना सीख पायी।

1893 में मैं डा ऐलिक्ज़ेंडर ग्रैहेम बेल के साथ विश्व मेला देखने गयी। मुझे उनके आविष्कार को छूने की अनुमति मिली।

डा. बेल ने मुझे टेलीफोन व अन्य उपकरणों के बारे में समझाया।
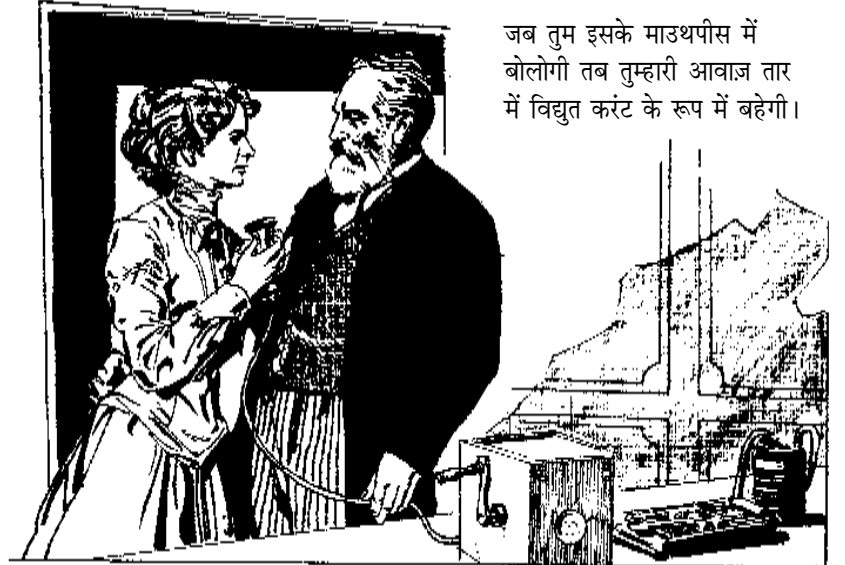
अगली गर्मियों में मैं न्यूयार्क सिटी में स्थित बहरे बच्चों के एक विशेष स्कूल में पढ़ने गयी।

दो साल बाद मैंने केम्ब्रिज स्कूल फॉर यंग लेडीज़ में दाखिला लिया। यहां रह कर मैंने कालेज की तैयारी की।

कक्षा में मिस सुलीवन मुझे अध्यापक की बातें समझातीं।

फिर मैंने टॉइपराईटर का उपयोग सीखा।

जीवन में पहली बार मुझे अपनी उम्र की लड़कियों की संगति में मज़ा आया।

1900 में, कुछ प्राइवेट ट्यूशनों और परीक्षाओं के बाद मुझे रेडक्लिफ कालेज में दाखिला मिला।

यह मेरे लिए अत्यन्त व्यस्तता का समय था...

पाठकों के लिए:

हेलन केलर ने जब यह आत्मकथा लिखी
उस समय वो कालेज में थीं।
ऍन सुलीवन की मदद से उन्होंने कालेज की पढ़ाई पूरी की
और बाद में वे विश्व-विख्यात हुयीं।
अपने ज़माने में वो इतनी प्रसिद्ध हुयीं कि अमरीका के कई
राष्ट्रपति - ग्रोवर क्लीवलैंड से लेकर जॉन एफ. कैनेडी
तक उनसे मिलने को इच्छुक थे।
इस विलक्षण महिला और उसकी अद्वितीय टीचर को
लोग सदा-सदा के लिए याद रखेंगे।
उनके जीवन की इस कहानी में
हरेक इंसान के लिए एक सबक है -
अगर मनुष्य चाहे तो बड़ी-से-बड़ी बाधा पर भी
विजय प्राप्त कर सकता है।

अंत